

१४० महामाया स्तव

ASHA ARCHIVES

3191

१४० मङ्गल माला

नमः शिवायः समवर्ग्य ॥ १ ॥ सन्निवृत्त ॥ माद्यसिन्धु ॥ श्रीगुर्वि
द्वयः कमलासिद्धि ॥ २ ॥ सुक ॥ भवेत्तमेन ॥ ३ ॥

१४० मङ्गल माला

ASHA ARCHIVES

3191

एतन्मन्त्रसाधनं विष्णुविष्णु अथवादि समस्त देवदेवी न विना अथन सर्ववस्तुनिष्ठं क दीर्घं
क निरुद्धं अगुल कला नायतीष्ट सिद्धार्थं धीमहि विद्महि निकायः कात्यायिन्याः सातवि
सूर्यनयः सादृष्टं इति विना मनुविद्यतं ईति गत्या दवीमोहात्मा म अमलकीलकं वक्रकवच
संमनस्य सवृत्तया ० मर्दकलिष्ट ॥ वल्लिकासयः सभः पुंशतचत्रिगत्य वक्राविधिं गायत्रीचक्रः ॥ १ ॥ म
हाकालीसर्ववता मन्दाशक्तिः नकचक्रिकादीर्घा अथिगत्तं समज्जुचत्रा भाग्ये विद्यारिचक्रा ॥ २ ॥
यविनियागः ॥ अथ ध्याना मधुकेटरनासार्थं मल्लुखावाचुजासनः ॥ दशवक्रा क्रोदमहजो दश
पादीकनयरा ॥ विशालया वाकमाना विशालाचमलतय स्रुनेदशीचदंष्ट्रा सा हीमय्या विरु ॥

वः ॥ नृयशोराग्य कानिनी मधुकिष्ठां सहे र्गयः ॥ अथवाच गदाहिल ॥ अथचक्रकुटीरि
यमिष्टिकां मधुशीर्षं निष्ठतद्विधिनदमे नृषासावेषु नृमीया महाकाली इति नयरा ॥ अथ
धिगावनी कृयाद् दशकक्रु यनायव ॥ ॥ १ ॥ नमः ॥ अथ विष्णवे ॥ अथनीसं गलाका
ली रुद्रकालीकयालिनि ॥ इति कमां डीवाधारी स्वाहास्वभानमा मग ॥ मधुकेटरवि
धि विष्णुवन्दनन ॥ नृपदंष्ट्रिजयं दति यथादहिद्विधाजहि ॥ २ ॥ महिषास्रननिर्ना
विष्णुवन्दनम ॥ नृपद ॥ ३ ॥ निईरुसंरु संदान विष्णुवन्दनम ॥ नृप ॥ ४ ॥ नकावि
दधवि स्रुमलु विनाडिनि ॥ नृप ॥ ५ ॥ वीहितायि यगवदी साहा अथवनदायिनि ॥ नृप

[illegible]

॥ स्वच्छन्द रेखी देव को धउ नम रेखी ॥ १८ ॥ य सुख लव ॥ पु यरु लव
 याय दाय की किता ॥ ज सिता ॥ म पूर ॥ लव नम रेखी ॥ १९ ॥ दे देव
 ॥ विदु कि दे नाय का निरु या न के । नमा निदव देव जि ज द्या प्र द्या प्र विदु म
 ॥ २० ॥ दे हख रां द ॥ ग देवी ॥ म मुरवी ॥ कि सा लिनी । कुन्द की गुरु म म म
 ॥ २१ ॥ का लाय नी लिवा ॥ २२ ॥ दि ल्य की नास मार या ना प्र का व का न्क जय
 ना । वा स्त्री माद म्वरी ॥ ग्वेव को माये विदु वी न था ॥ २३ ॥ वा ज दी ॥ ग्वेव
 ॥ को ला मुरवी वं ग वनी । उ मा देवी नमा मुरवी । या नि नी या लि ना थ वी ॥ ग्वेवी
 ॥ श्री मुरवी ॥

मादन्दी जाम् लुं लुं रुयानना । आ गतिर्वादि देव निकुला लोहक विन्दु
विम ॥ २४ ॥ अष्टाष्टक धत्री देवी लङ्कली वदुयिली । नन्दी एव वरुज
एनया याम्यानेम यवाली ॥ २५ ॥ वायव्या वैवकी वैत्री वैजा न्या कडका हता
। युया मवन्ला काया अष्टदासा जयनिका ॥ २६ ॥ चरित्रका म्बिका वैव देवि
काष्टकुचाष्टम । अलिता एम प्रुष्ट लु का धउमर्क हेयव ॥ २७ ॥ कयाली
सीषल एव सहाया एव वराष्टम । तथा काली उमा देवी देवदती नमामु ॥
२८ ॥ सुदुका लिस हामाया च म्मि लु रुयावदे । मा हाचु क्क मदा लान्क तममम
किन्नयिली ॥ २९ ॥ रुकुव ४ स्व तिसादा न देया त्रिकुप वस्तु ल । कामाधिनाम काम

यन्मदिवा मिव दिवुं ॥ ३० ॥ अस्ति दय ० नकोरु विम धं वैवमानव ॥ याप्रातिवि
लिता कामा म्मी ल्म रुव तिवस्तु ॥ ३१ ॥ ॥ रुति ली आद्यावता य लिव ४ की म
मसर्व मरुमाया रुव समार्क ॥ सम्वत ११९९ कार्तिक शुक्ल अष्टमी कुरुमी
पि विष्णु सन वाय धन का जग ॥ १२ ॥ रुमेरु रुवदा रुवाली विमिन्न ॥ ॥

1913
ASHA ARCHIVES

卷之四



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

Handwritten text in an ancient script, likely Pahlavi, on a heavily damaged and stained parchment fragment. The text is arranged in approximately 10 horizontal lines. The script is dense and cursive, with many characters appearing as stylized vertical strokes and loops. The parchment is brown and shows significant wear, including tears and discoloration.

Handwritten text in an ancient script, likely Pahlavi, on a heavily damaged and stained parchment fragment. The text is arranged in approximately 10 horizontal lines. The script is dense and cursive, with many characters appearing as stylized vertical strokes and loops. The parchment is brown and shows significant wear, including tears and discoloration.

॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥

[illegible]

[illegible]

मयदीनं विष्णुं नमः ॥ १ ॥
 विष्णुं नमः ॥ २ ॥
 विष्णुं नमः ॥ ३ ॥
 विष्णुं नमः ॥ ४ ॥
 विष्णुं नमः ॥ ५ ॥
 विष्णुं नमः ॥ ६ ॥
 विष्णुं नमः ॥ ७ ॥
 विष्णुं नमः ॥ ८ ॥
 विष्णुं नमः ॥ ९ ॥
 विष्णुं नमः ॥ १० ॥

[illegible]

॥ गायत्री ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ॥
अर्जुन उवाच ॥ द्रुपदमुनिप्रसादात्
पापक्षयस्तु मे कुरु ॥
तस्मात्तु मे पापक्षयः ॥
कुरु मे पापक्षयः ॥
द्रुपद उवाच ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
सर्वभूतहितं कुरु ॥ २ ॥
सर्वदुःखहर्त्रा ॥ ३ ॥
सर्वपापहर्त्रा ॥ ४ ॥
सर्वकलहहर्त्रा ॥ ५ ॥
सर्वमोक्षदायि ॥ ६ ॥
सर्वसुखदायि ॥ ७ ॥
सर्वसौख्यदायि ॥ ८ ॥
सर्वसमृद्धिदायि ॥ ९ ॥
सर्वसिद्धिदायि ॥ १० ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ११ ॥
सर्वभूतहितं कुरु ॥ १२ ॥
सर्वदुःखहर्त्रा ॥ १३ ॥
सर्वपापहर्त्रा ॥ १४ ॥
सर्वकलहहर्त्रा ॥ १५ ॥
सर्वमोक्षदायि ॥ १६ ॥
सर्वसुखदायि ॥ १७ ॥
सर्वसौख्यदायि ॥ १८ ॥
सर्वसमृद्धिदायि ॥ १९ ॥
सर्वसिद्धिदायि ॥ २० ॥